



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मकुंडली

Atul Bachchhav  
19/05/1992 03:15 PM  
Jalgaon

# प्राथमिक तपशील

## प्राथमिक तपशील

जन्म तारीख	19/05/1992
जन्माची वेळ	15:15
जन्माचे स्थान	Jalgaon
अक्षांश	21 N 00
रेखांश	75 E 33
वेळ विभाग	+05:30
अयनांश	23:45:02
सूर्योदय	5:48:32
सूर्यास्त	19:0:0

## घात चक्र

महिना	भाद्रपद
तिथी	5,10,15
दिवस	शनिवार
नक्षत्र	श्रवण
योग	शुक्ल
करण	कौलव
प्रहर	1
चंद्र	3

## पंचांग तपशील

तिथी	कृष्ण तृतीया
योग	साध्य
नक्षत्र	मूळ
करण	विष्टी

## ज्योतिषविषयक तपशील

वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनी	श्वान
गण	राक्षस
नाडी	आदी
जन्म राशी	धनु
राशी स्वामी	गुरु
नक्षत्र	मूळ
नक्षत्र स्वामी	केतू
चरण	3
युज्जा	परभाग
तत्व	अग्नी
नांवाची अक्षरे	भ
पाया	तांबे
लग्न	कन्या
लग्न स्वामी	बुध

# ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्रा	जन्म राशी	अंश	राशी स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	गृह
सूर्य	--	वृषभ	04:54:14	शुक्र	कृत्तिका	सूर्य	9
चंद्र	--	धनु	07:02:13	गुरु	मूळ	केतू	4
मंगळ	--	मीन	16:33:32	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनी	7
बुध	--	मेष	20:58:23	मंगळ	भरणी	शुक्र	8
गुरु	--	सिंह	11:23:57	सूर्य	मघा	केतू	12
शुक्र	--	मेष	28:04:33	मंगळ	कृत्तिका	सूर्य	8
शनी	--	मकर	24:39:53	शनी	धनिष्ठा	मंगळ	5
राहू	--	धनु	08:40:09	गुरु	मूळ	केतू	4
केतू	--	मिथुन	08:40:09	बुध	आर्द्रा	राहू	10
वर्चस्व असणारां	--	कन्या	14:46:20	बुध	हस्त	चंद्र	1



**सूर्य**

वृषभ  
कृत्तिका

तटस्थ



**चंद्र**

धनु  
मूळ

अनिष्टकारी



**मंगळ**

मीन  
उत्तर भाद्रपद

अनिष्टकारी



**बुध**

मेष  
भरणी

तटस्थ



**गुरु**

सिंह  
मघा

अनिष्टकारी



**शुक्र**

मेष  
कृत्तिका

योगकारक



**शनी**

मकर  
धनिष्ठा

तटस्थ



**राहू**

धनु  
मूळ

--

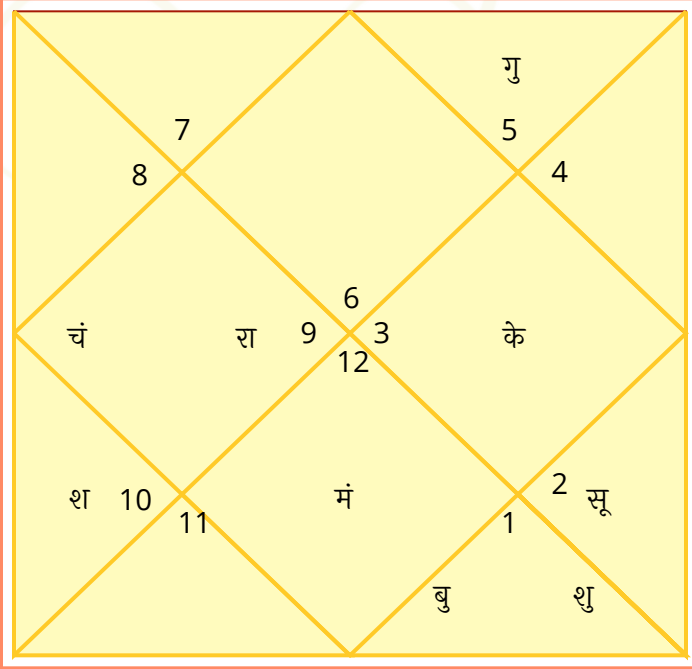


**केतू**

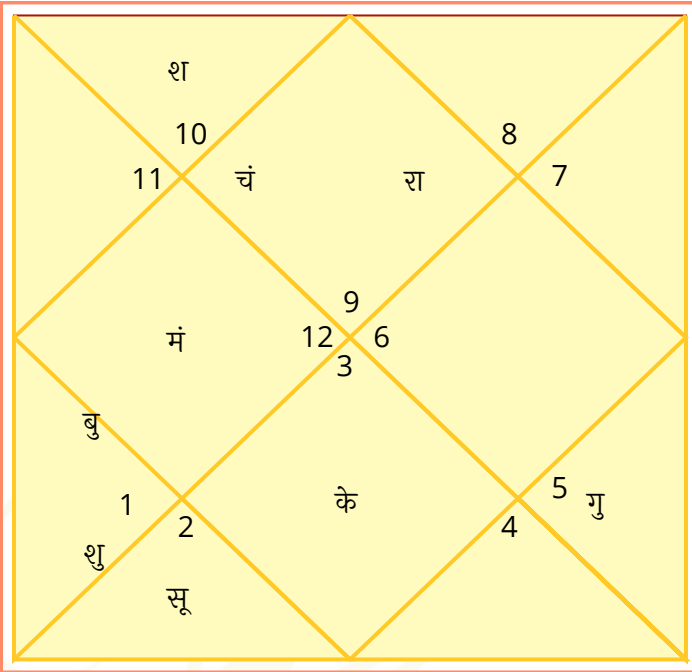
मिथुन  
आर्द्रा

--

## लग्न कुंडली

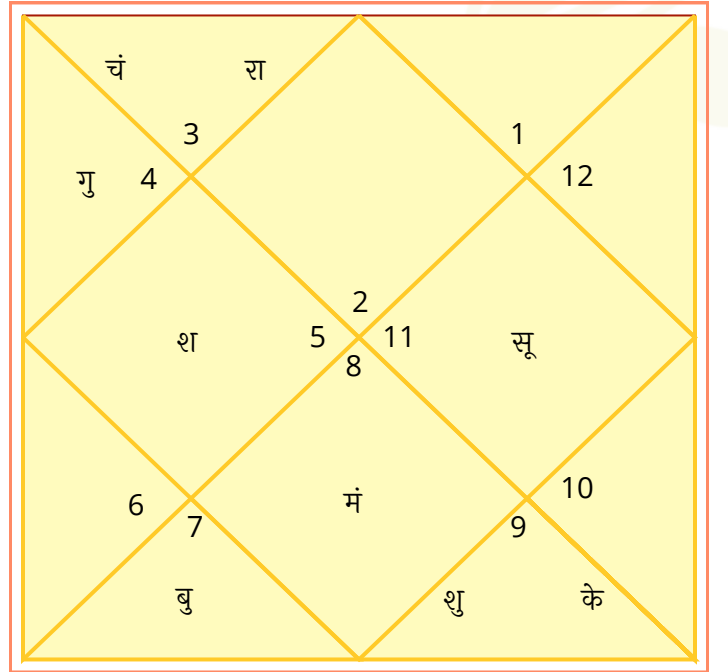


व्यक्तीच्या जन्मवेळी क्षितिजाच्या पूर्वेस जी रास अवतरित होते तीच त्या व्यक्तीची लग्न रास मानली जाते. जन्म कुंडली मध्ये बारा भाव असतात, ह्या बारा भावांमधील प्रथम भावाला लग्न भाव ह्या नावाने संबोधिले जाते, कुंडलीमधील बाकी सर्व भावांच्या तुलनेत लग्न भावाला सर्वाधिक महत्व आहे. लग्न भाव बालकाचा स्वभाव, रुची, वैशिष्ट्ये आणि चारित्र्यातील गुणांला प्रकट करतो.



## चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली नंतर ज्या राशी मध्ये चंद्र असेल त्या राशीला लग्न मानून आणखी एका कुंडलीचा निरमान केला जातो ज्याला आपण चंद्र कुंडली म्हणतो, फलित ज्योतिष शास्त्रात चंद्र कुंडलीस लग्न कुंडली इतकेच महत्व देण्यात आलेले आहे.

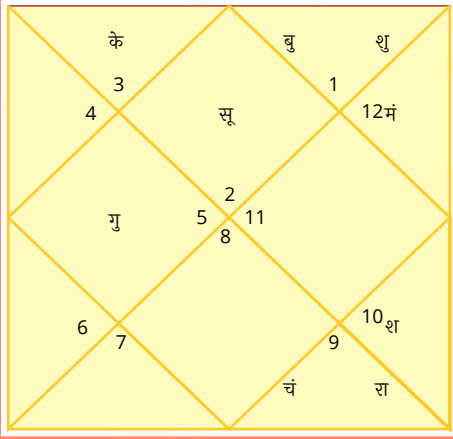


## नवमांश कुंडली

नवांश कुंडली नऊ भागात विभागली जाते, ज्याच्या आधारावर जन्म कुंडली चे विवेचन होते. नवांश कुंडली मधील ग्रह उत्तम स्थितीत व उच्च असल्यास त्यास वर्गोत्तम स्थिती उत्पन्न होते व व्यक्ती शारीरिक व आत्मिक रित्या स्वस्थ आणि शुभदायक स्थितीस प्राप्त करतो.

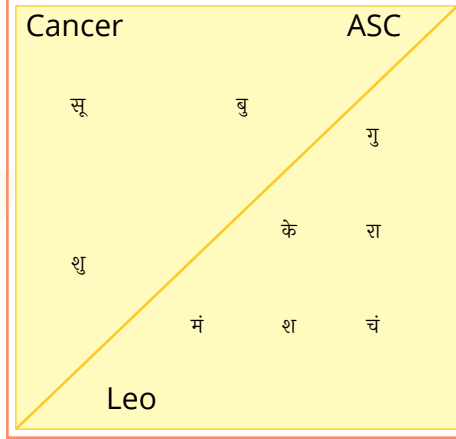
# वर्ग कुंडली

## सूर्य कुंडली



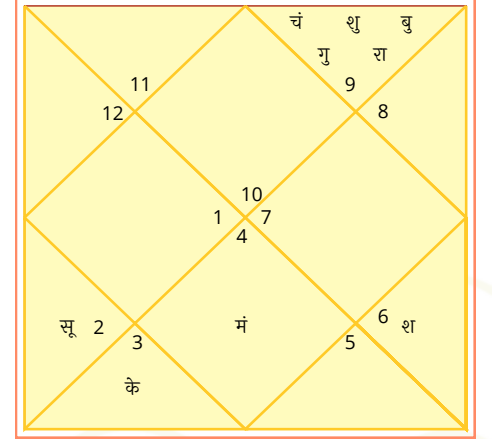
शरीर, स्वास्थ्य, रचना

## होरा कुंडली



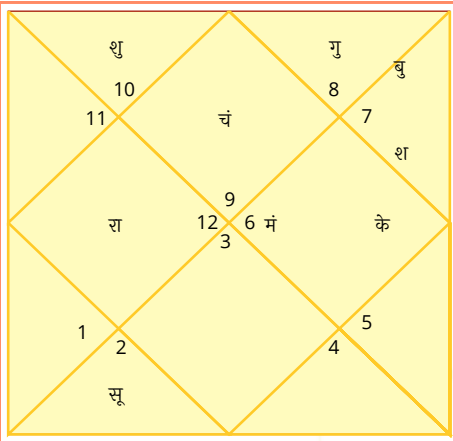
वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

## द्रेष्काण कुंडली



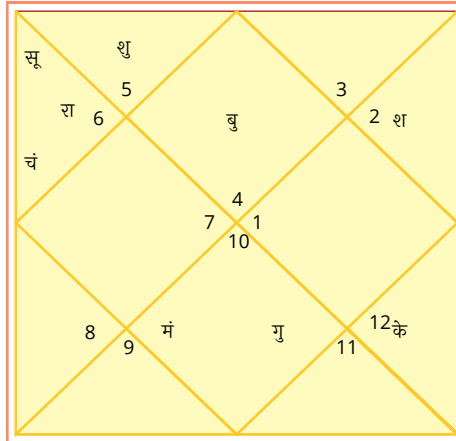
भाऊ बहीण

## चतुर्थाश कुंडली



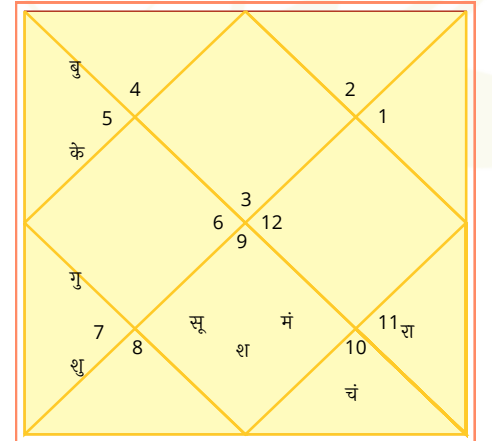
भाग्य

## पंचमांश कुंडली



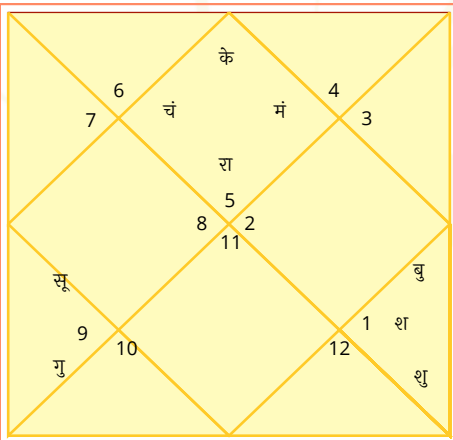
आध्यात्मिकता

## सप्तमांश कुंडली



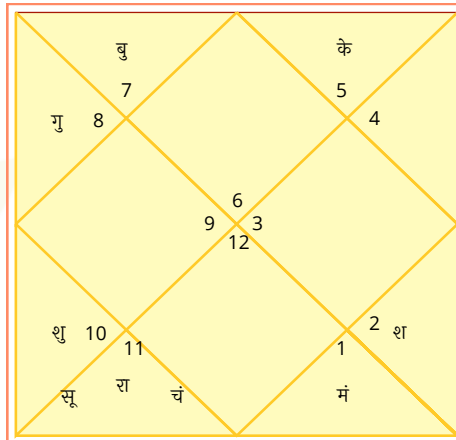
सन्तान

## अष्टमांश कुंडली



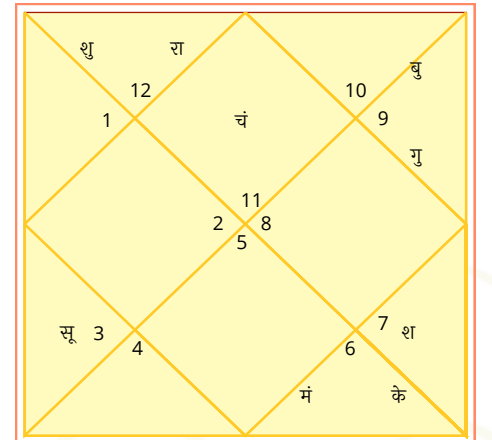
आयु

## दशमांश कुंडली



व्यवसाय, जीवनयापन

## द्वादश कुंडली



माता पिता, पितृक सुख

## लग्न - 14:46:20 दशम भाव मध्य - 14:38:07

गृह	जन्म राशी	भाव मध्य	जन्म राशी	भाव संधि
1	कन्या	14:46:20	कन्या	29:44:58
2	तूळ	14:43:36	तूळ	29:42:14
3	वृश्चिक	14:40:52	वृश्चिक	29:39:30
4	धनु	14:38:07	धनु	29:39:30
5	मकर	14:40:52	मकर	29:42:14
6	कुंभ	14:43:36	कुंभ	29:44:58
7	मीन	14:46:20	मीन	29:44:58
8	मेष	14:43:36	मेष	29:42:14
9	वृषभ	14:40:52	वृषभ	29:39:30
10	मिथुन	14:38:07	मिथुन	29:39:30
11	कर्क	14:40:52	कर्क	29:42:14
12	सिंह	14:43:36	सिंह	29:44:58

## चलित कुंडली

			गु	
	7		5	
8				4
चं	रा	9	6	के
		12	3	
श	10	मं		2 सू
	11		1	
		बु		शु

लग्न कुंडली चे शोधन चलित कुंडली आहे , फरक फक्त इतकाच आहे कि लग्न कुंडली हे दर्शवते कि जन्मवेळी लग्न काय आहे व सर्व ग्रह कोणत्या राशी मध्ये विचरण करीत आहेत व चलित कुंडली हे स्पष्ट करते कि जन्मवेळी कोणता भाव कोणत्या राशीचा प्रभाव आहे व कोणत्या भावास कोणता ग्रह प्रभावित करीत आहे

# वविम्शोत्तरी दशा - I

## केतू

08-09-1988 05:34  
08-09-1995 23:34

## शुक्र

08-09-1995 23:34  
08-09-2015 23:34

## सूर्य

08-09-2015 23:34  
08-09-2021 11:34

केतू	04-02-1989 09:01
शुक्र	06-04-1990 12:01
सूर्य	12-08-1990 08:07
चंद्र	13-03-1991 09:37
मंगळ	09-08-1991 13:04
राहू	27-08-1992 01:22
गुरु	02-08-1993 22:58
शनी	11-09-1994 18:37
बुध	08-09-1995 23:34

शुक्र	08-01-1999 11:34
सूर्य	08-01-2000 17:34
चंद्र	08-09-2001 11:34
मंगळ	08-11-2002 14:34
राहू	08-11-2005 08:34
गुरु	09-07-2008 08:34
शनी	08-09-2011 23:34
बुध	09-07-2014 20:34
केतू	08-09-2015 23:34

सूर्य	27-12-2015 13:22
चंद्र	27-06-2016 04:22
मंगळ	02-11-2016 00:28
राहू	26-09-2017 17:52
गुरु	15-07-2018 22:40
शनी	27-06-2019 22:22
बुध	03-05-2020 09:28
केतू	08-09-2020 05:34
शुक्र	08-09-2021 11:34

## चंद्र

08-09-2021 11:34  
08-09-2031 23:34

## मंगळ

08-09-2031 23:34  
08-09-2038 17:34

## राहू

08-09-2038 17:34  
08-09-2056 05:34

चंद्र	09-07-2022 20:34
मंगळ	07-02-2023 22:04
राहू	08-08-2024 19:04
गुरु	08-12-2025 19:04
शनी	10-07-2027 02:34
बुध	08-12-2028 13:04
केतू	09-07-2029 14:34
शुक्र	10-03-2031 08:34
सूर्य	08-09-2031 23:34

मंगळ	05-02-2032 03:01
राहू	22-02-2033 15:19
गुरु	29-01-2034 12:55
शनी	10-03-2035 08:34
बुध	06-03-2036 13:31
केतू	02-08-2036 16:58
शुक्र	02-10-2037 19:58
सूर्य	07-02-2038 16:04
चंद्र	08-09-2038 17:34

राहू	21-05-2041 21:46
गुरु	15-10-2043 12:10
शनी	21-08-2046 11:16
बुध	09-03-2049 20:34
केतू	28-03-2050 08:52
शुक्र	28-03-2053 02:52
सूर्य	19-02-2054 20:16
चंद्र	21-08-2055 17:16
मंगळ	08-09-2056 05:34

# वविम्शोत्तरी दशा - ॥

## गुरु

08-09-2056 05:34  
08-09-2072 05:34

## शनी

08-09-2072 05:34  
08-09-2091 23:34

## बुध

08-09-2091 23:34  
09-09-2108 05:34

गुरु	27-10-2058 10:22
शनी	09-05-2061 17:34
बुध	15-08-2063 15:10
केतू	21-07-2064 12:46
शुक्र	22-03-2067 12:46
सूर्य	08-01-2068 17:34
चंद्र	09-05-2069 17:34
मंगळ	15-04-2070 15:10
राहू	08-09-2072 05:34

शनी	12-09-2075 00:37
बुध	22-05-2078 03:46
केतू	30-06-2079 23:25
शुक्र	30-08-2082 14:25
सूर्य	12-08-2083 14:07
चंद्र	12-03-2085 21:37
मंगळ	21-04-2086 17:16
राहू	25-02-2089 16:22
गुरु	08-09-2091 23:34

बुध	04-02-2094 15:01
केतू	01-02-2095 19:58
शुक्र	02-12-2097 16:58
सूर्य	09-10-2098 04:04
चंद्र	10-03-2100 14:34
मंगळ	07-03-2101 19:31
राहू	25-09-2103 04:49
गुरु	31-12-2105 02:25
शनी	09-09-2108 05:34

## वर्तमान दशा



दशेचे नांव	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पत्ति तिथि
महादशा	चंद्र	08-09-2021 11:34	08-09-2031 23:34
अंतर्दशा	मंगळ	09-07-2022 20:34	07-02-2023 22:04
प्रत्यंतर दशा	सूर्य	10-01-2023 12:16	21-01-2023 03:56
सूक्ष्म दशा	राहू	12-01-2023 13:16	14-01-2023 03:37

\* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते



# योगिनी दशा - I

## उल्का (6 वर्ष)

20-3-1989 0:50  
20-3-1995 0:50

## सिद्धा (7 वर्ष)

20-3-1995 0:50  
20-3-2002 0:50

## संकेता (8 वर्ष)

20-3-2002 0:50  
20-3-2010 0:50

उल्का	20-3-1990 6:50
सिद्धा	20-5-1991 9:50
संकेता	18-9-1992 9:50
मंगला	18-11-1992 6:50
पिंगळा	20-3-1993 0:50
धन्या	18-9-1993 15:50
भ्रमरी	20-5-1994 3:50
भद्रिका	20-3-1995 0:50

सिद्धा	29-7-1996 4:20
संकेता	17-2-1998 8:20
मंगला	29-4-1998 8:50
पिंगळा	18-9-1998 9:50
धन्या	19-4-1999 11:20
भ्रमरी	28-1-2000 13:20
भद्रिका	17-1-2001 15:50
उल्का	20-3-2002 0:50

संकेता	29-12-2003 8:50
मंगला	19-3-2004 12:50
पिंगळा	28-8-2004 20:50
धन्या	29-4-2005 8:50
भ्रमरी	20-3-2006 0:50
भद्रिका	29-4-2007 20:50
उल्का	28-8-2008 20:50
सिद्धा	20-3-2010 0:50

## मंगला (1 वर्ष)

20-3-2010 0:50  
20-3-2011 0:50

## पिंगळा (2 वर्ष)

20-3-2011 0:50  
20-3-2013 0:50

## धन्या (3 वर्ष)

20-3-2013 0:50  
20-3-2016 0:50

मंगला	30-3-2010 4:20
पिंगळा	19-4-2010 11:20
धन्या	19-5-2010 21:50
भ्रमरी	29-6-2010 11:50
भद्रिका	19-8-2010 5:20
उल्का	19-10-2010 2:20
सिद्धा	29-12-2010 2:50
संकेता	20-3-2011 0:50

पिंगळा	29-4-2011 14:50
धन्या	29-6-2011 11:50
भ्रमरी	18-9-2011 15:50
भद्रिका	29-12-2011 2:50
उल्का	28-4-2012 20:50
सिद्धा	17-9-2012 21:50
संकेता	27-2-2013 5:50
मंगला	20-3-2013 0:50

धन्या	19-6-2013 8:20
भ्रमरी	19-10-2013 2:20
भद्रिका	20-3-2014 6:50
उल्का	18-9-2014 21:50
सिद्धा	19-4-2015 23:20
संकेता	19-12-2015 11:20
मंगला	18-1-2016 21:50
पिंगळा	20-3-2016 0:50

# योगिनी दशा - ॥

## भ्रमरी (4 वर्ष)

20-3-2016 0:50  
20-3-2020 0:50

भ्रमरी	29-8-2016 8:50
भद्रिका	20-3-2017 6:50
उल्का	18-11-2017 18:50
सिद्धा	29-8-2018 20:50
संकेता	20-7-2019 12:50
मंगला	30-8-2019 2:50
पिंगळा	19-11-2019 6:50
घन्या	20-3-2020 0:50

## भद्रिका (5 वर्ष)

20-3-2020 0:50  
20-3-2025 0:50

भद्रिका	28-11-2020 16:20
उल्का	29-9-2021 1:20
सिद्धा	19-9-2022 3:50
संकेता	29-10-2023 23:50
मंगला	19-12-2023 17:20
पिंगळा	30-3-2024 4:20
घन्या	29-8-2024 8:50
भ्रमरी	20-3-2025 0:50

## उल्का (6 वर्ष)

20-3-2025 0:50  
20-3-2031 0:50

उल्का	20-3-2026 6:50
सिद्धा	20-5-2027 9:50
संकेता	18-9-2028 9:50
मंगला	18-11-2028 6:50
पिंगळा	20-3-2029 0:50
घन्या	18-9-2029 15:50
भ्रमरी	20-5-2030 3:50
भद्रिका	20-3-2031 0:50

## सिद्धा (7 वर्ष)

20-3-2031 0:50  
20-3-2038 0:50

सिद्धा	29-7-2032 4:20
संकेता	17-2-2034 8:20
मंगला	29-4-2034 8:50
पिंगळा	18-9-2034 9:50
घन्या	19-4-2035 11:20
भ्रमरी	28-1-2036 13:20
भद्रिका	17-1-2037 15:50
उल्का	20-3-2038 0:50

## संकेता (8 वर्ष)

20-3-2038 0:50  
20-3-2046 0:50

संकेता	29-12-2039 8:50
मंगला	19-3-2040 12:50
पिंगळा	28-8-2040 20:50
घन्या	29-4-2041 8:50
भ्रमरी	20-3-2042 0:50
भद्रिका	29-4-2043 20:50
उल्का	28-8-2044 20:50
सिद्धा	20-3-2046 0:50

## मंगला (1 वर्ष)

20-3-2046 0:50  
20-3-2047 0:50

मंगला	30-3-2046 4:20
पिंगळा	19-4-2046 11:20
घन्या	19-5-2046 21:50
भ्रमरी	29-6-2046 11:50
भद्रिका	19-8-2046 5:20
उल्का	19-10-2046 2:20
सिद्धा	29-12-2046 2:50
संकेता	20-3-2047 0:50

# योगिनी दशा - III

## पिंगळा (2 वर्ष)

20-3-2047 0:50  
20-3-2049 0:50

## धन्या (3 वर्ष)

20-3-2049 0:50  
20-3-2052 0:50

## भ्रमरी (4 वर्ष)

20-3-2052 0:50  
20-3-2056 0:50

पिंगळा	29-4-2047 14:50
धन्या	29-6-2047 11:50
भ्रमरी	18-9-2047 15:50
भद्रिका	29-12-2047 2:50
उल्का	28-4-2048 20:50
सिद्धा	17-9-2048 21:50
संकेता	27-2-2049 5:50
मंगला	20-3-2049 0:50

धन्या	19-6-2049 8:20
भ्रमरी	19-10-2049 2:20
भद्रिका	20-3-2050 6:50
उल्का	18-9-2050 21:50
सिद्धा	19-4-2051 23:20
संकेता	19-12-2051 11:20
मंगला	18-1-2052 21:50
पिंगळा	20-3-2052 0:50

भ्रमरी	29-8-2052 8:50
भद्रिका	20-3-2053 6:50
उल्का	18-11-2053 18:50
सिद्धा	29-8-2054 20:50
संकेता	20-7-2055 12:50
मंगला	30-8-2055 2:50
पिंगळा	19-11-2055 6:50
धन्या	20-3-2056 0:50

## भद्रिका (5 वर्ष)

20-3-2056 0:50  
20-3-2061 0:50

भद्रिका	28-11-2056 16:20
उल्का	29-9-2057 1:20
सिद्धा	19-9-2058 3:50
संकेता	29-10-2059 23:50
मंगला	19-12-2059 17:20
पिंगळा	30-3-2060 4:20
धन्या	29-8-2060 8:50
भ्रमरी	20-3-2061 0:50

## \* दशा समाप्तीची तारीख दर्शवते

9

भाग्यांक

1

मूलांक

6

नामांक

तुमचे नांव	Atul Bachchhav
जन्म तारीख	19-5-1992
मूलांक	1
मूलांक स्वामी	सूर्य
मित्र अंक	9
सम अंक	2
शत्रु अंक	6
शुभ दिवस	रविवार, सोमवार
शुभ रत्न	माणिक
शुभ उपरत्न	रक्तेमणि, लाल तुरमली
शुभ देवता	सूर्य
शुभ धातु	तांब
शुभ रंग	लाल
शुभ मंत्र	ओम ह्रिंग सूर्याय नमः

## तुमच्याबद्दल

मूलांक 1च्या प्रभावामुळे, तुम्ही एक दृढ विश्वासाची व्यक्ती असाल. जेव्हाही कधी तुम्ही तुमचा शब्द कुणाला देता, तेव्हा तुम्ही तो पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करता. तुमची इच्छाशक्ती अचल असेल. तुमच्या मानसिक आणि मैत्रीसंबंधांमध्ये स्थिरता असेल. तुमच्या जिवलग नात्यांविषयी तुम्ही ज्या काही अपेक्षा कराल, त्या पूर्ण करण्याचा तुम्ही नेहेमी दीर्घकाळ प्रयत्न कराल. तुमचे प्रेम आणि दीर्घकालीक संबंध चिरंतन असतील. जर काही कारणाने तुमचे कुणाशी कटुसंबंध निर्माण झाले किंवा वाद झाले, तर ते सुद्धा दीर्घकाळासाठी असतील. तुमच्या स्वतंत्र विचार करणाऱ्या स्वभावगुणामुळे, तुम्हाला इतरांच्या इच्छेनुसार काम करणे त्रासदायक वाटेल.

कुणाच्या हाताखाली काम करण्यापेक्षा, स्वतंत्र निर्णय घेण्याच्या वातावरणामध्ये तुमची भरभराट होईल. तुमच्या निरंतर प्रयासामुळे, तुम्ही जे काही कार्य कराल ते निष्पक्ष आणि कोणत्याही दबावाशिवाय असेल. कुणाहीकडून हस्तक्षेप तुम्हाला बिलकुल चालणार नाही. जसा मूलांक 1चा स्वामी सूर्य आहे, सूर्याशी संबंधित अद्वितीय वैशिष्ट्ये तुमच्यामध्ये कमीजास्त प्रमाणात उपस्थित असतील. सूर्याच्या प्रभावामुळे तुमची इतरांना मदत करणे, उपचार करण्याची वृत्ती असेल. सामाजिक वर्तुळामध्ये सूर्यासारखे चमकायला तुम्हाला आवडेल. सामाजिक संस्थांचे मुख्य होण्याची तुमची सदैव इच्छा असेल. तुम्ही हे पद तुमच्या परिश्रमाने आणि समर्पणाने प्राप्त कराल

## तुमच्यासाठी शुभ वेळ

पश्चिमी ज्योतिषशास्त्राप्रमाणे सूर्याचे मेष आणि सिंह राशीत संक्रमण 21 मार्च पासून 20 एप्रिल पर्यंत आणि 24 जुलै पासून ते 23 ऑगस्ट पर्यंत होत असते. हिंदू विचारानुसार या तारखा 13 एप्रिल पासून ते 12 मे पर्यंत आणि 17ऑगस्ट पासून ते 16 सप्टेंबर पर्यंत आहेत. मेष राशीमध्ये सूर्य उच्च स्थानी असतो तर सिंह राशीत तो स्वतःच्या राशीत असतो.

जसे की या काळात सूर्याचे किरण तीव्र आणि तेजस्वी असतात, ही वेळ मूलांक 1च्या लोकांसाठी सर्व प्रकारे प्रगतीची आणि लाभकारी असते. या काळात हाती घेतलेली सर्व कार्ये त्यांचे लक्ष्य पूर्ण करतात. तुम्ही तुमच्या सर्वात महत्वाच्या योजना आणि कल्पना त्या सर्व तारखांना तडीस नेण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे ज्यादिवशी तुमचा स्वतःचा मूलांक असतो जसे की कोणत्याही महिन्याची 1ली, 10वी, 19वी किंवा 28वी तारीख

## शुभ गायत्री मंत्र



तुम्ही प्रत्येक दिवशी सकाळी स्नान केल्यानंतर खालील सूर्य गायत्री मंत्र 11, 21 किंवा 108 वेळा जप केला पाहीजे  
:।। आदीत्य विदमाहे प्रभाकराय धीमहि तनः सूर्यः प्रचोदयात् ।।



ज्या वेळी व्यक्तीच्या कुंडलीतील राहू व केतू ग्रहांच्या मधोमध अन्य ग्रहांचा समावेश होतो त्या वेळी कालसर्प दोषाचा निर्माण होतो कारण कुंडलीतील एका भावात राहू व दुसऱ्या भावात केतू स्थानापन्न झाल्याने, इतर ग्रहां कडून होणारी फलप्राप्ती स्थगित होते, ह्या दोन्ही ग्रहां मध्ये बाकी ग्रह अडकून जातात व व्यक्ती साठी समस्या उत्पन्न करतातह्या दोषा मुळे, कामात बाधा निर्माण होणे, नौकरीत अडचण येणे , लग्न कार्यात विलंब होणे व आर्थिक समस्या ईत्यादी त्रास उदभवतात

कालसर्प दोषाने पीडित असलेल्या सर्व व्यक्तींवर ह्या दोषाचा समान प्रभाव पडत नाही . कोणत्या भावा मध्ये कोणती रास आहे व त्या मध्ये कोण कोणते ग्रह कुठे स्थित आहेत व त्यांची शक्ती

कितपत आहे ह्या सर्व बाबींचा परिणाम पीडित व्यक्तीवर पडतो. म्हणूनच, कालसर्पयोग असल्यास भयभीत होण्याची आवश्यकता नसून त्या बद्दलचे सखोल ज्योतिषीय विश्लेषण करवून घेणे व त्याच्या प्रभावां बद्दल तपशीलवार माहिती मिळवणे अधिक उचित ठरेल.कालसर्प योग जरी त्रासदायक मानला जात असला तरी विधिवत प्रकारे त्याचा उपाय केल्याने ह्या योगाचे सिद्ध योगात रुपांतर होऊ शकते.

अनंत

कुळिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कर्कोटक

शंखचूड

घातक

विषधर

शेषनाग

## तुमच्या जन्मकुंडलीतील काळसर्पयोग



### काळसर्प योगाची उपस्थिती

तुमची कालसर्प दोषाची दिशा उतरती आहे, जी जास्त शक्तिशाली नसते. तुमच्या जन्मपत्रिकेवर कालसर्प दोषाचा अंशतः प्रभाव आहे.

### काळसर्प नांव

शंखपाल

### दिशा

अर्ध उतरता

## काळसर्प दोषाचे फळ

तुमच्या कुंडलीमध्ये शंखपाल कालसर्प योग आहे. त्यामुळे चांगले शिक्षण प्राप्त करण्यात तुम्हाला अडथळे येतील. यश फार मोठ्या प्रयत्नानंतर मिळेल. कालसर्प योगामुळे जातक संपत्ती आणि चलत मालमत्तेच्या समस्यांमध्ये गडून जाईल . वैवाहिक जीवन दुःखदायी आणि अशांत असते. जातक आई वडिलांच्या प्रेमाला वंचित राहू शकतो. जातकाला नोकर आणि वाहनांचा आनंद मिळणार नाही आणि त्यामुळे त्रास होईल. कालसर्प योगामुळे बहुतेकवेळा जातक आजाराने त्रस्त असेल. चंद्राचा प्रभाव जातकाच्या मनाला अस्थिर व अशांत करतो. जातक एकावेळी खूप कामे करतो पण एकही वेळेवर पूर्ण होत नाही. यामुळे हानी होते. जातकाचे मित्र पुनःपुन्हा फसवण्याचा प्रयत्न करतात. खूपशा प्रसंगांमध्ये प्रतिष्ठा बाद होते किंवा प्रशंसेचा अभाव असेल. कालसर्प योगामुळे जातक संपत्ती आणि चलत मालमत्तेच्या समस्यांमध्ये गडून जातो. या सर्व उणीवा असूनही, जातक शेवटी यश प्राप्त करतो.

## काळसर्प दोषावर उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यंत्र घरात स्थापन करावे त्याची नियमित पूजा करावी
- हनुमान चालीसा १०८ वेळा पठण करावी।
- रुद्रभषेक- शंकराचा रुद्र अभिषेक अथवा पंचोपचार पूजन, उज्जैन च्या महाकालेश्वर मंदिरात , काशी विश्वनाथ मंदिरात अथवा कोणत्याही ज्योतिर्लिंग शिव मंदिरात करावे
- शुभ मुहूर्त पाहून वाहत्या पाण्यात तीन वेळा कोळसा सोडावा
- विद्यार्थी वर्गाने सरस्वती मातेचे विधिवत पूजन करावे व सरस्वती बीज मंत्राचा एक वर्ष जाप करावा
- महामृत्युंजय मंत्राचा जाप ११ माळा रोज ,राहू व केतूची दशा अंतर्दशा असे पर्यंत करावा व दर शनिवारी श्री शनिदेवाला तेलाभिषेक करावा आणि मंगळवारी हनुमंताला वस्त्र चढवावे .
- श्रावण मासात ३० दिवस शंकराला अभिषेक करावा
- एक वर्षभर गणपती अथर्वशीर्षाचे नित्य पठण करावे
- श्रावणात रोज अंघोळीनंतर ११ माळी नमः शिवाय या मंत्राचा जाप करून शंकराला बेल पत्र व गायीचे दूध आणि गंगाजल अर्पण करावे व सोमवारी उपवास घरावा





## मंगळ दोष म्हणजे काय?

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं।

अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम

भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वादिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |  
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

## मांगलिक विश्लेषण

एकूण मंगळ टक्केवारीमध्ये

34%

## मांगलिक फळ

तुमच्या कुंडलीत मांगलिक दोष आढळला आहे आणि त्याचे प्रमाण परिणामकारक आहे त्यामुळे तुम्हाला योग्य काळजी घेण्याची गरज आहे. तुम्हाला मंगळ आहे.



## गृह/भाव वर आधारीत

तुमच्या जन्म पत्रिकेत चतुर्थ या घरात राहू स्थित आहे.

तुमच्या कुंडली मध्ये शनी ग्रह पंचम या घरात आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत सप्तम घर मंगळ ग्रहणे व्यापलेले आहे.



## दृष्टीवर आधारीत

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील चौथ्या घरावर केतू ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील बाराव्या घरावर राहू ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील आठव्या घरावर राहू ग्रहाची दृष्टी आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेतील सातव्या घरावर शनी ग्रहाची दृष्टी आहे.

मंगळ ग्रह तुमच्या जन्म पत्रिकेत दुसऱ्या घरावर दृष्टी ठेऊन आहे.

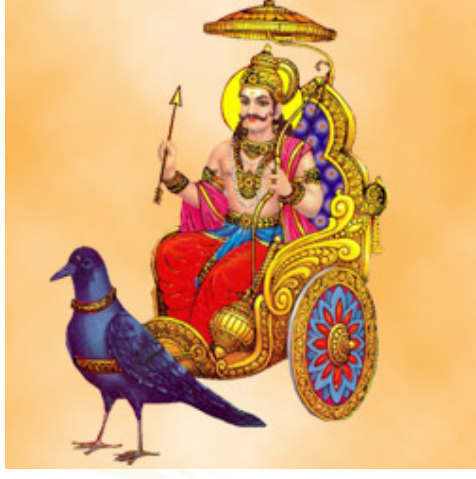
शनी ग्रह तुमच्या जन्म पत्रिकेत दुसऱ्या घरावर दृष्टी ठेऊन आहे.

केतू ग्रह तुमच्या जन्म पत्रिकेत दुसऱ्या घरावर दृष्टी ठेऊन आहे.

तुमच्या जन्म पत्रिकेत पहिल्या घरावर मंगळ या ग्रहाची दृष्टी आहे.

## मंगळ दोषाचे उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |
- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |
- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |
- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |
- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |
- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुःप्रभाव में लाभ मिलता है |
- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |
- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |



## साडेसाती दोष म्हणजे काय?

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साडे साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साडे सात वर्ष का समय लेता है जो साडे साती कही जाती है।

सामान्य अर्थ में साडे साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छः मास।

साडे साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं है। इसमें कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साडे साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साडे साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी,

अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

## तुमच्या कुंडलीतील साडेसातीची उपस्थिती



हो, सध्या तुमची साडेसाती सुरु आहे.

विचार करायचे दिवसं

13-1-2023

शनि राशि

मकर

चंद्र राशी

धनु

वक्री शनी

नाही

# रत्न उपाय सूचना

प्राचीन काळापासून, हे मान्यताप्राप्त आहे कि रत्ने, एक अलंकारीक अभीव्यक्ती असण्याखेरीज, उपचार करण्याच्या आणि रक्षण करण्याच्या दैवी शक्तीने समृद्ध आहेत. वैदिक ज्योतिषानुसार, ग्रह सूक्ष्म उर्जा प्रसारित करतात ज्यांचा आपल्या जन्म कुंडलीमध्ये असलेल्या त्यांच्या स्थितीवर अवलंबून आपल्या जीवनावर अनुकूल किंवा प्रतिकूल परिणाम प्रतिध्वनित होतो. प्रत्येक ग्रहाचे एकमेव विशिष्ट असे त्याच्याशी सुसंगत असणारे ज्योतिष रत्न आहे जे त्या ग्रहाप्रमाणेच तशाच वैश्विक रंगाची उर्जा उत्सर्जित करते. रत्ने सकारात्मक किरणे प्रतिबिंबित करून किंवा नकारात्मक किरणांचे शोषण करून कार्य करतात. योग्य रत्न वापरण्याने त्याच्याशी सुसंगत ग्रहाचा ते वापरणाऱ्यावर सकारात्मक परिणाम होण्यामध्ये वृद्धी होऊ शकते कारण रत्न सकारात्मक स्पंदने वेगळी करून घेते आणि फक्त त्यांनाच ते वापरणाऱ्याच्या शरीरात प्रवेश करण्यास अनुमती देते.

## जीवन रत्न



पन्ना

ऍसेन्डन्ट किंवा लग्न हे शरीर आणि त्याच्याशी संबंधित असलेले सर्व काही ठळकपणे दर्शवते, उदा. आरोग्य, दीर्घायुष्य, नांव, प्रतिष्ठा, जीवनमार्ग, इत्यादी. थोडक्यात, त्याच्यामध्ये संपूर्ण जीवनाचे सार सामावलेले आहे. त्यामुळे लग्नेश बरोबर सुसंगत असलेले रत्न, ऍसेन्डन्टचा स्वामी याला जीवनरत्न म्हणजे लाइफस्टोन असे म्हटले जाते.

## कारक रत्न



नीलम

कुंडलीतील पाचवे घर हे अजून एक शुभ घर आहे. पाचवे घर बुद्धीमत्ता, उच्च शिक्षण, मुले, अनपेक्षित लाभ इत्यादी ठळक दर्शवणारे आहे. हे घर पूर्व पुण्याईच्या कर्मांचे स्थान म्हणजे भूतकाळातील पुण्यकर्मांचे सुद्धा घर आहे. त्यामुळे ते शुभ घर म्हणून मानले जाते. पाचव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला लाभ रत्न असे म्हटले जाते.

## भाग्य रत्न



हीरा

कुंडलीतील नवव्या घराला भाग्यस्थान म्हटले जाते म्हणजे नशीब किंवा दैवाचे घर. हे घर सुदैव, यश, गुणवत्ता, प्राप्ती, ज्ञान इत्यादीशी संबंधित आहे. हे घर ती कर्म फळे दर्शवते जी एखादी व्यक्ती त्याने त्याच्या पूर्वजन्मांमध्ये केलेल्या पुण्यकर्मांमुळे उपभोगू शकेल. नवव्या घराच्या स्वामीशी सुसंगत असणाऱ्या रत्नाला भाग्यरत्न म्हणजे लकी स्टोन असे म्हटले जाते. हे रत्न वापरल्याने भाग्य हा घटक बळकट होतो.

## जीवन रत्न - पत्रा



पर्याय	हिरवा गोमेद
बोट	कनिष्ठा
भार	4 - 6.25 कैरेट

दिवस	बुधवार
अधिदेवता	बुद्ध
धातु	सुवर्ण



### वर्णन

पाचू हे बुध ग्रहाचे रत्न आहे. पाचू परिधान केल्याने चांगले आरोग्य, मजबूत शरीर, संपत्ती, मालमत्ता व चांगली दृष्टी मिळते. पाचू वाईट आत्मा, सर्पदंश व दुष्टात्म्याच्या वाईट प्रभावापासून रक्षण करतो. पाचूमुळे अपस्मार, वेडेपणा व वाईट स्वप्न बरी होतात.



### वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी बुधवारी सकाळी सूर्योदयाच्या २ तासानंतर पाचू परिधान करावा.



### बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर पाचूची अंगठी उजव्या हाताच्या करंगळीमध्ये घालावी.



### वजन आणि धातु

पाचू हा तीन कैरेटपेक्षा जास्त वजनाचा घातला पाहिजे. तो सोन्याच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि पाचूचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



### मंत्र

एकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि पाचू रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. पाचू रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ ब्रां ब्रौं सः बुधाय नमः



### पर्याय

पाचूला पर्याय म्हणून ऍक्वामरीन, पेरिडॉट, हिरवा गोमेद किंवा हिरवा जेडस्टोन वापरू शकता.



### प्राण प्रतिष्ठा

पाचू परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



### इशारा

पाचू कधीही लाल पोवळे, मोती व पुष्कराज हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.

## कारक रत्न - नीलम



पर्याय	निळा
बोट	मध्यमिका
भार	3 - 4.25 कैरेट

दिवस	शनिवार
अधिदेवता	शनि
धातु	चांदी



### वर्णन

नीलम हे शनी ग्रहाचे रत्न आहे. नीलम परिधान केल्याने आरोग्य, संपत्ती, दीर्घायुष्य, आनंद, समृद्धी, नावलौकिक व प्रसिद्धी प्राप्त होते.



### वापरण्याची वेळ

नीलम शनिवारी सूर्यास्तापूर्वी २ तास परिधान करावे.



### बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर नीलमची अंगठी उजव्या हाताच्या मधल्या बोटांमध्ये घालावी.



### वजन आणि धातु

नीलम निदान ५ कैरेट वजनाचे घातले पाहिजे. ते स्टील किंवा अष्टधातूच्या अंगठीत जडवून घालावे. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे कि रत्नाचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



### मंत्र

एकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि नीलम रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. या रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ प्रां प्रीं प्रीं सः शनैश्चराय नमः



### पर्याय

नीलम रत्नाला पर्याय म्हणून निळे झिरकॉन, अमेथिस्ट, निळे तुर्मलाईन नीलमणी निळे स्पायनेल वापरू शकता.



### प्राण प्रतिष्ठा

नीलम परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



### इशारा

नीलम कधीही हिरा, मोती, पुष्कराज व लाल पोवळे ही रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.

## भाग्य रत्न - हीरा



पर्याय	ओपल / जिरकॉन
बोट	कनिष्ठा
भार	1 - 4.25 कैरेट

दिवस	शुक्रवार
अधिदेवता	शुक्र
धातु	चांदी



### वर्णन

हिरा हे शुक्राचे रत्न आहे. हिरा परिधान केल्याने धैर्य, यश, संपत्ती, समृद्धी वपवित्रता मिळते. हिरा घालणारा माणूस निर्भय, ज्ञानी व शिष्टाचारी बनतो. हिरा धार्मिक शास्त्रात कुशल बनवतो. हिरा सर्प दंशापासून व दुष्ट आत्म्याच्या वाईट प्रभावापासून रक्षण करतो.



### वापरण्याची वेळ

चांद्रमासाच्या तेजस्वी मध्यवेळी शुक्रवारी सकाळी हिरा परिधान करावा.



### बोट

मंत्र जप झाल्यानंतर हिर्याची अंगठी उजव्या हाताच्या करंगळीमध्ये घालावी.



### वजन आणि धातु

हिरा हा निदान दिड कॅरेट वजनाचा घातला पाहिजे. तसेच तो प्लॅटिनम किंवा चांदीच्या अंगठीत जडवून घालावा. अंगठी अशा प्रकारे बनवली पाहिजे की हिर्याचा स्पर्श आपल्या त्वचेला झाला पाहिजे.



### मंत्र

एकदा अंगठी घालण्या आधीचे विधी पूर्ण झाले कि हिरा रत्नाची पूजा फुले व धुपाने करावी. हिरा रत्नासाठी खालील मंत्र १०८ वेळा जपावा.

ॐ द्रां द्रीं द्रीं सः शुक्राय नमः



### पर्याय

हिर्याला पर्याय म्हणून सफेद पुष्कराज, सफेद गोमेद किंवा सफेद टूर्मलाईन वापरू शकता.



### इशारा

हिरा कधीही माणिक, मोती, पुष्कराज व लाल पोवळे हि रत्ने व त्यांचे पर्याय यासोबत घालू नये.



### प्राण प्रतिष्ठा

हिरा परिधान करण्याआधी त्याची अंगठी निरसे दूध किंवा गंगाजल मध्ये काहीकाळ बुडवून ठेवावी.



## लग्न फळ - कन्या

स्वामी	बुध
प्रतीक	कन्या
वैशिष्ट्ये	गावरान, निः शब्द, दक्षिण
भाग्यशाली रत्न	पाचू
व्रत करण्याचे दिवस	शुक्रवार

**देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |  
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||**

कन्या लग्न असणाऱ्या लोकांचा व्यवहारी, विश्लेषक, भेदभाव करणारे, अतिचोखंदळ, सावध, अचूक, तपशीलाकडे लक्ष देणारे, पद्धतशीर, शांत, गृहीत न धरणारे, लाजाळु, गंभीर, विचारी आणि थोडाफार स्वकेंद्रीत असण्याकडे कल असतो.

तुमचा एक चतुर, सक्रिय आणि जागरूक मेंदू असतो. माहिती प्राप्त करणे आणि त्याचा चांगला उपयोग करणे हे तुमच्यासाठी महत्वाचे असते. तुम्ही परिपूर्णता राखण्यासाठी धडपडता आणि तुमच्यासारख्या व्यक्तीबरोबर राहाणे किंवा सभोवती असणे हे थोडेफार त्रासाचे असू शकते कारण तुमचे स्वतःसाठी आणि इतरांसाठी आदर्श इतके उच्च असतात.

“ कधीकधी इतर तेवढे उच्च आदर्शांपर्यंत पोहोचण्यासाठी कधीही पुरेसे चांगले नसतात. गोष्टींमधील दोष आणि काय चुकले आहे ते शोधणे हे तुमचे काम आहे.

कधी कधी, जरी यामुळे नातेसंबंध बिघडू शकतात कारण तुमच्या प्रियजनांवरच आणि ते करणाऱ्या गोष्टींवर तुम्ही तुमची टीकाखोर नजर वळवता. निराशावादी दृष्टीकोन आणि स्वतःचे तीव्र टीकाकार असणे हे दोन दोष आहेत जे तुम्ही सुधारणा केले पाहिजेत.



तुमचा अति चिंता करण्याकडे कल असतो, विशेष करून जेव्हा छोट्या कारणांबद्दल, छोट्या तपशीलाबद्दल. अतिचिंता आरोग्य समस्यांचे कारण होऊ शकते. तुम्ही प्रत्येक अनुभव पचवणे आणि तो कडवटपणा, पश्चात्ताप, द्वेष किंवा तिरस्कार आणल्याशिवाय आत्मसात करणे शिकले पाहिजे.

तुम्ही अपुरेपणाच्या भावनेतून उदभवणारी कोणत्याही प्रकारची नकारात्मकता दूर करणे गरजेचे आहे. तुमचा तुम्ही जितक्या वयाचे आहात त्यापेक्षा तरुण दिसण्याचा कल असतो, तुमचे कितीही वय असले तरी.

“ तुम्ही अत्यंत अस्वस्थ आणि चिंताग्रस्त असता, त्यामुळे तुमचे क्वचितच वजन वाढते. कधीकधी तुम्ही अत्यंत अनिर्णीत मनाचे आणि अनिश्चित असता. शिकण्यासाठी आध्यात्मिक धडा: सेवा. बुध कन्या राशीवर राज्य करतो त्यामुळे तुमच्या कुंडलीत बुधाचे महत्वाचे स्थान असेल.



## शिकण्याचा आध्यात्मिक धडा



सेवा

### सकारात्मक लक्षण



हुशार

विश्लेषणात्मक

उत्तम स्मृती असलेला

समर्पित

### नकारात्मक लक्षण




आत्मविश्वास नसलेला


स्वार्थी

अस्वस्थ आणि चिंतीत

असाध्य मागण्या करणारा



We Build Apps and Games for the next Billion



**Anivale Pvt. Ltd**

<https://anivalegames.com>

+91- 221232 55

[nayarkody@gmail.com](mailto:nayarkody@gmail.com)